दा'वते इस्लामी के शबे मे'राज 27 रजब 1437
हि. सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मे'राजे मुस्त़फ़ा की ह़िक्मतें

(Hindi)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं दुरूद की कसरत करता हूं, मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ने के लिये कितना वक़्त मुक़र्रर करूं ? फ़रमाया : "जितना चाहो कर लो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "चौथाई ?" फ़रमाया : "जितना चाहो कर लो, लेकिन अगर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ोगे तो बेहतर है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "निस्फ़ ?" फ़रमाया : "जितना चाहो पढ़ो, मगर ज़ियादा पढ़ोगे तो बेहतर है।" अ़र्ज़ की : "मैं सारा वक़्त आप पर दुरूदे पाक पढ़ता रहूंगा।" फ़रमाया : "फिर तो येह अ़मल तुम्हारी परेशानियों को किफ़ायत करेगा और तुम्हारी मग़फ़िरत का सबब बन जाएगा।"

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب اکثروا علیّ الصلوٰۃ فی یوم الجمعۃ، رقم ۳۶۳۱، ج۳، ص ۱۹۸)

बैठते, उठते, जागते, सोते
हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر للطّبرانی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

www.dawateislami.net

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

बयान कर्ने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रजब की दुआ

रजब में येह दुआ पढ़ना सुन्नत है ! जब रजब का महीना आता तो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ पढ़ते थे :

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبٍ وَّشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَان

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू हमारे लिये रजब और शा'बान में बरकतें अ़ता फ़रमा और हमें रमज़ान तक पहुंचा। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوسط لِلطَّبَرَانی ج3ص85حدیث3939)

अ़ज़ीम व बा बरक्त रात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज 1437 सिने हिजरी के र-जबुल मुरज्जब की 27 वीं शब है, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र है कि उस ने हमें एक मरतबा फिर अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइलो बरकात वाली मुक़द्दस रात नसीब फ़रमाई। येह वोह अ़ज़ीम और बा बरकत रात है कि जिस में ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہٗ ने हमारे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, ह़बीबे किब्रिया, शबे असरा के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा अ़ता फ़रमाया। मे'राजे मुस्त़फ़ा की क्या क्या ह़िक्मतें हैं, आज की इस नूरानी रात में क्या क्या वाक़िआ़त रूनुमा हुवे, कैसी कैसी अन्वारो तजल्लियात की बारिशें हुईं, इस के बयान करने का कौन ह़क़ अदा कर सकता है ? अलबत्ता मुख़्तसरन कुछ मदनी फूल पेश किये जाएंगे, निहायत ही तवज्जोह और दिल जम्ई के साथ सुनिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मे'राज के दुल्हा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत दिल में मज़ीद उजागर होगी।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इ़श्को मस्ती में डूब कर **मे'राजे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मन्ज़र कशी करते हुवे, **''क़सीदए मे'राजिया''** के इब्तिदाई 12 अश्आ़र में क्या फ़रमाते हैं : आइये ! आप को उन अश्आ़र का ख़ुलासा सुनाता हूं।

आज की रात रिसालत व नुबुव्वत के सरबराह व बादशाह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्शे मुअ़ल्ला पे जल्वागर हुवे तो उस अ़रब के मेहमाने ज़ीशान की ख़ुशी व फ़रह़त के लिये तमाम अस्बाब को जम्अ़ कर दिया गया, **आज की रात** तमाम फ़िरिश्ते और तमाम अफ़्लाक अपनी

www.dawateislami.net

अपनी सुर और लह्जे में बुलबुलों के अन्दाज़ में नग़मा सरा थे और कह रहे थे कि आज की रात कैसी बहार है ! बहारों ! तुम्हें येह ख़ुशियां मुबारक हो ! और ऐ बाग़ो ! तुम को भी आबादियां और बहारें मुबारक हो, **आज की रात** आसमान और ज़मीन दोनों पर ख़ुशियों का समां था और धूम मची हुई थी, **आज की रात** नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मे'राज की ख़ुशी में नूर की बारिश हो रही थी, (जैसे दुल्हा की आमद पे फूल बरसाए जाते हैं) **आज की रात** हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से उन अन्वार के इस्तिक़्बाल के लिये ख़ुश्बूएं महक रही थीं और ख़ूब चहल पहल थी, जिस त़रह़ शादी वाले घर में होता है, **आज की रात** ख़ुशी से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर से इस क़दर नूर फूट रहा था कि जिस ने अ़र्श तक सारा समां रौशन कर दिया था, **आज की रात** इस क़दर जगमगा रही थी कि ऐसा लगता था हर जगह आईने लगा दिये गए हों और ख़ानए का'बा एक नई दुल्हन की त़रह़ ह़सीनो जमील हो गया था, **आज की रात** उस के हुस्नो जमाल में इन्तिहाई जोश और जोबन आ गया था और ह़जरे अस्वद पर क़ुरबान जाऊं कि जो का'बे की कमर में एक तिल की त़रह़ है, **आज की रात** उस में भी लाखों सजावटों के रंग भर गए थे, **आज की रात** मे'राज के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक व मोह़तरम व मुक़द्दस आंखों में ख़ुसूसी तजल्लियात थीं, **आज की रात** हर त़रफ़ से ख़ुशियों के बादल उमंड कर आ रहे थे, दिलों के मोर अपने रंग दिखा रहे थे, **आज की रात** नग़मए ना'त का ऐसा समां बन गया था कि ख़ुद ह़रम भी वज्द में था, **आज की रात** का'बे की छत पर बना हुवा सुनेह़री परनाला जिस का नाम **"मीज़ाबे रह़मत"** है, झूमर की त़रह़ मा'लूम हो रहा था, **आज की रात** का'बए मुअ़ज़्ज़मा चमक दमक रहा था और उस के ख़ुश्बूदार ग़िलाफ़ को रात की ठन्डी हवा उड़ा रही थी और उस से ख़ुश्बू चुरा रही थी, **आज की रात** ख़ुश्बूओं में बसा हुवा ग़िलाफ़े का'बा वज्द में झूम रहा था, **आज की रात** पहाड़ियों का हुस्नो सिंघार भी क्या ख़ूब था कि उन की ख़ूब सूरत व बुलन्द चोटियां ऐसी ह़सीन लग रही थीं, वाह ! वाह ! क्या कहने, **आज की रात** बादे सबा ने उन के सब्ज़े में ऐसी लहरें पैदा कीं, कि ऐसा मा'लूम हो रहा था, जैसे पहाड़ियों ने सब्ज़ रंग के दुपट्टे ओढ़ रखे हैं,

www.dawateislami.net

आज की रात नह्रों का ह़ाल येह था कि नह्रों ने गुस्ल कर के जारी पानी का चमक दार लिबास पहन रखा था, **आज की रात** मे'राज के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिक़्बाल के लिये चांद की चांदनी का पुराना फ़र्श उठा दिया गया था और नूरी मख़्लूक़ की आंखों का ज़र्रीं और ज़र बफ़्त फ़र्श (या'नी सोने और रेशम के तारों से बुना हुवा फ़र्श) बिछा दिया गया था।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज की रात वोह अ़ज़ीम और जगमगाती रात है कि जिस में हमारे आक़ा, ह़बीबे किब्रिया, मे'राज के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा, **आज की रात** तमाम फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में इन्तिहाई तेज़ रफ़्तार सुवारी, बुराक़ ले कर ह़ाज़िर हुवे, फ़िरिश्तों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुल्हा बना दिया, निहायत एह़तिराम के साथ बुराक़ पर सुवार किया गया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आनन फ़ानन मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस पहुंचे, सारे नबियों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल किया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारे नबियों की इमामत फ़रमाई, **आज की रात** आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारे आसमानों की सैर फ़रमाई और उस के अ़जाइबात देखे, **आज की रात** आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर हर आसमान पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को अपनी ज़ियारत से नवाज़ा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी पर नबियों ने मुबारक बादियां पेश कीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा पहुंचे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस मक़ाम पर पहुंचे कि जिस से आगे बढ़ने कि किसी की मजाल नहीं, यहां तक कि उस मक़ाम पर जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मा'ज़िरत की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस मक़ाम पर पहुंचे जहां अ़क़्लो ख़िरद की भी रसाई नहीं, **आज की रात** आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन्आ़माते इलाहिय्या से नवाज़े गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुसूसी इन्आ़मात अ़त़ा हुवे, **आज की रात** आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इब्तिदाअन 50 नमाज़ों का तोह़्फ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से अ़त़ा हुवा जो तख़्फ़ीफ़ के बा'द पांच नमाज़ों की सूरत में हम पर फ़र्ज़ किया गया, **आज की रात** आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत और दोज़ख़ की सैर फ़रमाई, **आज की रात** आप

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ास कुर्ब हासिल किया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सर की आंखों से ख़ालिक़ो मालिके काइनात عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया।

बागे आ़लम में बादे बहारी चली — सरवरे अम्बिया की सुवारी चली
येह सुवारी सूए ज़ाते बारी चली — अब्रे रहमत उठा आज की रात है
तूर चोटी को अपनी झुकाने लगा — चांदनी चांद हर सू दिखाने लगा
अ़र्श से फ़र्श तक जगमगाने लगा — रश्के सुब्हे सफ़ा आज की रात है
इत्रे रहमत फ़िरिश्ते छिड़कते चले — जिस की खुश्बू से रस्ते महकते चले
चांद तारे जिलो में चमकते चले — कहकशां ज़ेरे पा आज की रात है
तूर पर रिफ़्अ़ते ला मकानी कहां — مَنْ رَّاٰنِی कहां لَن تَرَانِی कहां
जिस का साया नहीं उस का सानी कहां — उन का इक मो'जिज़ा आज की रात है
जज़्बे हुस्ने त़लब हर क़दम साथ है — दाएं बाएं फ़िरिश्तों की बारात है
सर पे नूरानी सेहरे की क्या बात है — शाह दुल्हा बना आज की रात है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تَبَارَكَ الله शान तेरी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज की रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया, जिस की त़लब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दिल की धड़कन बनी रही, ह़त्ता कि येही आरज़ू व इल्तिजा बन कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक लबों पर आ गई और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "رَبِّ اَرِنِیْ ऐ रब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा !" रब عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "لَنْ تَرٰىنِیْ, तू मुझे हरगिज़ नहीं देख सकेगा।" मगर जब बात अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आई तो खुद ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को भेज कर मह़बूब को बुलवाया और अपने दीदार से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाया। जभी तो आ़शिक़े माहे रिसालत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाया :

تَبَارَكَ الله शान तेरी तुझी को ज़ेबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वोह जोशे لَنْ تَرٰىنِیْ, कहीं तक़ाज़े विसाल के थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 234)

www.dawateislami.net

शे'र की वज़ाह़त

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू बड़ी बरकत वाला है और तेरी शान बहुत बुलन्द है और बे नियाज़ी तेरी ही शान के लाइक़ है और तेरे काम भी कैसे निराले कि एक त़रफ़ तू ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दीदार त़लब करने के बा वुजूद फ़रमा रहा है **''ऐ मूसा तू मुझे हरगिज़ नहीं देख सकता''** और दूसरी त़रफ़ अपने ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात के तक़ाज़े फ़रमा रहा है। (शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 665)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शाह दुल्हा बना आज की रात है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने करीम में वाक़िअए मे'राज के बा'ज़ ह़िस्से को इन अल्फ़ाज़ के साथ पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की आयत नम्बर 1 में यूं बयान फ़रमाया है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है।*

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : ''मे'राज शरीफ़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक मो'जिज़ा और **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत है और इस से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह कमाले क़ुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूक़े इलाही में आप के सिवा किसी को मुयस्सर नहीं। मे'राज शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, येही जम्हूर (या'नी अक्सर) अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم اجمعین इसी के मानने वाले हैं।'' (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 525)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर शै पर क़ादिर है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला ने आज की रात के इस अ़ज़ीम वाक़िआ़ को क़ुरआने पाक में लफ़्ज़े "سُبْحٰن" से शुरूअ़ फ़रमाया है, जिस से मुराद अल्लाह तआ़ला की पाकी और ज़ाते बारी तआ़ला का हर ऐ़ब व नक़्स से पाक होना है। इस में हिक्मत येह है कि मे'राजे जिस्मानी की बिना पर मुन्किरीन की त़रफ़ से जिस क़दर ए'तिराज़ात हो सकते थे, उन सब का जवाब हो जाए। मसलन हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जिस्मे अक़्दस के साथ बैतुल मुक़द्दस या आसमानों पर तशरीफ़ ले जाना और वहां से "ثُمَّ دَنٰى فَتَدَلّٰى" (क़ुर्बे ख़ुदा वन्दी) की मन्ज़िल तक पहुंच कर थोड़ी सी देर में वापस तशरीफ़ ले आना मुन्किरीन के नज़दीक ना मुमकिन और मुह़ाल था। अल्लाह तआ़ला ने लफ़्ज़े "سُبْحٰن" फ़रमा कर येह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि येह तमाम काम मेरे लिये भी ना मुमकिन और मुह़ाल हों तो येह मेरी आ़जिज़ी और कमज़ोरी होगी और कमज़ोरी एक ऐ़ब है और मैं हर ऐ़ब से पाक हूं।

(मक़ालाते क़ाज़िमी, हिस्सए अव्वल, स. 123)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर फ़ख़्रे मौजूदात, सय्यिदे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े पर बेजा ए'तिराज़ात करना कोई नई बात नहीं बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौरे मुबारक से अब तक बहुत से ना समझ और ह़क़ीक़त से ना आश्ना लोग इस अ़ज़ीम मो'जिज़े का इन्कार करते आए हैं। एक मुसलमान के लिये बस येही काफ़ी है कि इस वाक़िए़ को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने के बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़ाक़त व क़ुदरत को पेशे नज़र रखे, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ पर क़ादिर है। इस बात को मज़ीद समझने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उम्मती ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की येह करामत भी ज़ेह्न में रखिये कि उन्हों ने अस्सी(80) गज़ लम्बा और चालीस(40) गज़ चौड़ा हीरों और जवाहिरात से आरास्ता तख़्त, पलक झपकने से पहले पहले यमन से मुल्के शाम में पहुंचा दिया था, इस वाक़िआ़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पारह 19 सूरए नम्ल की आयत नम्बर 40 में यूं बयान फ़रमाया है :

www.dawateislami.net

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ؕ

(پ:۱۹، النمل:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था कि मैं उसे हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ السَّلَام के एक उम्मती को सेंकड़ों मील की मसाफ़त पर मौजूद इन्तिहाई वज़्नी तख़्त पलक झपकने से पहले उठा लाने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है तो यक़ीनन वोही रब عَزَّوَجَلَّ अपनी ज़ाती क़ुदरत व त़ाक़त से अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रात के थोड़े से हिस्से में मकान व ला मकान की सैर करवाने पर भी क़ादिर है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :

ख़िरद से कह दो कि सर झुका ले गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं यां ख़ुद जिहत को लाले किसे बताए किधर गए थे
सुराग़े ऐनो मता कहां था निशाने कैफ़ो इला कहां था
न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल न मर्ह़ले थे
कैसे मिले घाट का कनारा किधर से गुज़रा कहां उतारा
भरा जो मिस्ले नज़र त़रारा वोह अपनी आंखों से ख़ुद छुपे थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 235)

अश्आ़र की वज़ाह़त

(★) या'नी अ़क़्ल से कह दो कि किन ख़यालों मे डूबी हुई है, येह नज़ारा तेरी समझ में नहीं आ सकता, लिहाज़ा सरे तस्लीम ख़म कर ले क्यूंकि गुज़रने वाले गुज़र चुके हैं और तेरी हवा को भी पता नहीं चल सका और तुझे कैसे पता चलता, यहां तो छे सिम्तों को भी इस बात की ख़बर न थी कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मे'राज की रात किस त़रफ़ गए हैं। (शर्ह़े कलामे रज़ा, स. 667)

www.dawateislami.net

(★) कोई क्या बताए कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे मे'राज कहां ? कब ? और कैसे तशरीफ़ ले गए ? इन तमाम सुवालात के जवाबात किसी के पास नहीं क्यूंकि वहां ''कब'' और ''कहां'' का तसव्वुर ही न था और न ही ''कैसे'' और ''कहां तक'' का निशान था, वहां न तो कोई आप का साथी था और न कोई मन्ज़िल का निशान था। (शर्ह़ कलामे रज़ा, स. 669)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि आज की रात के इस अ़ज़ीम वाक़िअ़ए मे'राज और नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीगर मो'जिज़ात को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने के बजाए सच्चे दिल से तस्लीम करें और अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये ऐसे लोगों की सोह़बते बद से दूर रहिये कि जो प्यारे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात व कमालात का इन्कार करते हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में बे अदबियां गुस्ताख़ियां करते हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं :

ह़य्य बाक़ी जिस की करता है सना — मरते दम तक उस की मिद्ह़त कीजिये
जिस का ह़ुस्न अल्लाह को भी भा गया — ऐसे प्यारे से मह़ब्बत कीजिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 195)

अश्आ़र की वज़ाह़त

(★) या'नी वोह ख़ुदा जो हमेशा बाक़ी व ज़िन्दा रहने वाला है, जब वोह अपने प्यारे की ता'रीफ़ फ़रमाता है तो उस के बन्दों को समझ लेना चाहिये कि वोह येही चाहता है कि हर कोई हर वक़्त मेरे मह़बूब की ता'रीफ़ करे ताकि मेरे मह़बूब का मह़बूब बन के मेरा भी मह़बूब बन जाए क्यूंकि दोस्त का दोस्त भी दोस्त हुवा करता है।

(★) जिस प्यारे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ुस्नो जमाल ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ को भी पसन्द आया है, ऐ गुनाहगारो ! दुन्या के बरबादी वाले ह़ुस्न के पीछे पड़ने के बजाए उस मह़बूब के रुख़े वद्दुह़ा और ज़ुल्फ़े वल्लैल से प्यार करो, जिस की वज्ह से पूरी काइनात में बहार आ गई।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

वाक़िअए मे'राज की हिक्मतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मशहूर मुहावरा है कि : "فِعْلُ الْحَكِيْمِ لَايَخْلُو عَنِ الْحِكْمَةِ" हकीम का कोई भी काम हिक्मत से ख़ाली नहीं होता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर काम में बे शुमार हिक्मतें पोशीदा होती हैं जिन्हें समझने से हमारी अक़्लें क़ासिर होती हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मदनी हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मे'राज करवाई, इस में एक हिक्मत नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दिल जूई और तस्कीने ख़ातिर भी थी, क्यूंकि जिस रोज़ सफ़ा की चोटी पर खड़े हो कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरैशे मक्का को दा'वते तौहीद दी थी, उसी रोज़ से कुफ़्फ़ार के बुग़्ज़ो अदावत के शो'ले भड़कने लगे, हर तरफ़ से मसाइबो आलाम का सैलाब उमंड आया । रन्जो ग़म का अन्धेरा दिन ब-दिन गहरा होता चला गया । लेकिन इस तारीकी में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू तालिब और उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का वुजूद हर नाज़ुक मर्हले पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये तस्कीन व इत्मीनान का सबब बना रहा, ए'लाने नुबुव्वत के दसवें साल आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ने वफ़ात पाई, इस सदमे का जख़्म अभी भरा भी न था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मूनिस (या'नी हमदर्द) व ग़म ख़्वार हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا भी विसाल फ़रमा गईं, कुफ़्फ़ारे मक्का को अब इन ज़ियादतियों से रोकना और उन के ज़ुल्मो सितम पर मलामत करने वाला भी कोई न रहा, जिस के बाइस उन की ईज़ा रसानियां (या'नी उन की तरफ़ से तक्लीफ़ें) ना क़ाबिले बरदाश्त हद तक बढ़ गईं ।

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ताइफ़ तशरीफ़ ले गए कि शायद वहां के लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दा'वत को क़बूल करने के लिये आमादा हो जाएं, लेकिन वहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जो ज़ालिमाना बरताव किया गया, इस का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, उन हालात में जब ब ज़ाहिर हर हर तरफ़ मायूसी का अन्धेरा फैल चुका था और ज़ाहिरी सहारे भी टूट चुके थे, रहमते इलाही ने अपनी अज़्मतो किब्रियाई

www.dawateislami.net

की वाज़ेह़ निशानियों का मुशाहदा कराने के लिये अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आ़लमे बाला की सैर के लिये बुलाया, ताकि ह़ालात की ज़ाहिरी नासाज़ गारी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मज़ीद ग़मगीन न कर सके।

ज़हे इ़ज़्ज़तो ए'तिलाए मुह़म्मद (صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم) कि है अ़र्शे ह़क़ ज़ेरे पाए मुह़म्मद (صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم)
मकां अ़र्श उन का, फ़लक फ़र्श उन का मलक ख़ादिमाने सराए मुह़म्मद (صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم)
ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद (صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم)

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 65)

अश्आ़र की वज़ाह़त

(★) سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वाह वाह क्या बात है ! **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कितना बुलन्द रुत्बा अ़त़ा फ़रमाया है कि अ़र्शे मुअ़ल्ला अपनी तमाम तर बुलन्दियों के बा वुजूद हु़ज़ूरे पुर नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक पाउं के नीचे है।

(★) जिन का ठहरना अ़र्श पे है और रहना फ़र्श पे है (और गुज़रना आसमानों से) जब कि फ़िरिश्ते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे दौलत के नौकर चाकर हैं।

(★) दोनों जहान ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी के त़लबगार हैं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा चाहता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और ह़िक्मत

✸ मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वाक़िअ़ए मे'राज की ह़िक्मतें बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : वोह तमाम मो'जिज़ात और दरजात जो अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अ़लाहिदा अ़लाहिदा अ़त़ा फ़रमाए गए, वोह तमाम बल्कि उन से बढ़ कर (कई मो'जिज़ात) हु़ज़ूरे पुर नूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अ़त़ा हुवे। इस की बहुत सी मिसालें हैं : ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को येह दरजा मिला कि वोह कोहे तू़र पर जा कर रब (عَزَّوَجَلَّ) से कलाम करते थे, ह़ज़रते (सय्यिदुना) ईसा عَلَیْہِ السَّلَام चौथे आसमान पर बुलाए गए और ह़ज़रते

इद्रीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जन्नत में बुलाए गए, तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मे'राज कराई गई, जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलाम भी हुवा, आसमान की सैर भी हुई, जन्नत व दोज़ख़ का मुआ़इना भी हुवा, ग़रज़ येह कि सारे मरातिब एक ही मे'राज में त़ै करा दिये गए। (शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 107, मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

तूर पर कोई, कोई चर्ख़ पे येह अ़र्श से पार
सारे बालाओं पे बाला रही बालाई दोस्त

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 63)

शे'र की वज़ाह़त

(★) या'नी किसी की मे'राज तूर तक है (जैसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام), किसी की चौथे आसमान तक (जैसे ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام) और हमारे आक़ा, ह़बीबे किब्रिया, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मे'राज की गर्द को भी कौन पहुंच सकता है, क्यूंकि आप की बुलन्दी तमाम सर बुलन्दियों की बुलन्दी से भी बुलन्द है।

सारे ऊंचों में ऊंचा समझिये जिसे
है उस ऊंचे से ऊंचा हमारा नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और ह़िक्मत

✸ मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक ह़िक्मत येह भी है कि तमाम पैग़म्बरों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की और जन्नत व दोज़ख़ की गवाही दी और अपनी अपनी उम्मतों से اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا الله पढ़वाया, मगर उन ह़ज़राते (अम्बियाए किराम) में से किसी की गवाही न तो देखी हुई थी और न ही सुनी हुई और गवाही की इन्तिहा देखने पर होती है, तो ज़रूरत थी कि इन अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की जमाअ़ते पाक में से कोई ऐसी हस्ती भी हो कि जो इन तमाम चीज़ो को देख कर गवाही दे, उस की गवाही पर शहादत की तक्मील हो जाए। येह शहादत की तक्मील हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ात पर हुई। (कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम चीज़ों को अपनी मुबारक आंखों से मुलाह़ज़ा फ़रमाया) (शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 107, मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه
क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

त़ूरे मूसा चर्ख़े ईसा क्या मुसाविय्ये दना हो
सब जिहत के दाइरे में शश जिहत से तुम वरा हो
सब मकां में तुम ला मकां में तन हैं तुम जाने सफ़ा हो

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 342)

अश्आ़र की वज़ाह़त

(★) या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام को कोहे त़ूर पर बुलाया, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहु़ल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام को आसमान पर बुलाया और हमारे आक़ा ह़बीबुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़र्श पे बुला कर "ثُمَّ دَنٰى فَتَدَلّٰى" का कु़र्ब अ़त़ा फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का त़ूर पर तशरीफ़ ले जाना, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का चौथे आसमान पर तशरीफ़ ले जाना, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कु़र्बे ख़ासे ख़ुदा वन्दी के बराबर हरगिज़ नहीं हो सकता।

(★) सारे अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسلام एक न एक जिहत के दाइरे में हैं, या'नी उन को ख़ास ख़ास शानें, कमालात और मो'जिज़ात अ़त़ा फ़रमाए गए, मगर ऐ मेरे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत की तो कोई ह़द ही नहीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम जिहतों और कै़दों से वराउल वरा हैं।

(★) ऐ प्यारे आक़ा, ह़बीबे ख़ुदा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मकान में हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान येह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ला मकां की सैर भी कर आए हैं, सारे नबी अगर जिस्म हैं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पाकीज़ा जान और पाक रूह़ की त़रह़ हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और हिक्मत

✸ **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम ख़ज़ानों का मालिक बनाया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 30 सूरतुल कौसर की आयत नम्बर 1 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّاۤ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* *ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं।*

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है, हुज़ूर मालिके दीनो दुन्या, शबे असरा के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मैं सो रहा था कि ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुन्जियां लाई गईं और मेरे दोनों हाथों में रख दी गईं।" (بخاری، ۲/۲۹۷۷، ۳۰۳) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं (**अल्लाह** तआ़ला के ख़ज़ानों का) ख़ाज़िन हूं।" (مسلم، ۵۱۶/۱۰۳۷)

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उस की तमाम सल्त़नत के मालिक हैं इसी लिये जन्नत के पत्ते पत्ते पर, ह़ूरों की आंखों में ग़रज़ येह कि हर जगह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ लिखा हुवा है। या'नी येह चीज़ें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बनाई हुई हैं और मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह को दी हुई हैं। (तो मे'राज करवाने में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी येह थी कि (दो जहांनों के ख़ज़ानों के) मालिक को उस की मिल्किय्यत दिखा दी जाए।

(शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 107, मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

चुनान्चे, इस लिये मे'राज की रात येह सैर करवाई गई।

दे दिये तुम को अपने ख़ज़ाने रब्बे इ़ज़्ज़त रब्बे उ़ला ने
दोनों जहां की ने'मत वाले तुम पर लाखों सलाम
तुम पर लाखों सलाम

अ़र्शे उ़ला पर रब ने बुलाया अपना जल्वए ख़ास दिखाया
ख़ल्वत वाले जल्वत वाले तुम पर लाखों सलाम
तुम पर लाखों सलाम

तख़्त तुम्हारा अ़र्श ख़ुदा का मुल्के ख़ुदा है मिल्क तुम्हारा
रब की आ'ला ख़िलाफ़त वाले तुम पर लाखों सलाम
तुम पर लाखों सलाम

www.dawateislami.net

तुम को देखा ह़क़ को देखा आप की सूरत उस का जल्वा
अच्छी अच्छी सूरत वाले तुम पर लाखों सलाम
तुम पर लाखों सलाम
चश्मे सर ने ह़क़ को देखा दिल ने ह़क़ को ह़क़ ही जाना
ऐ ह़क़्क़ानी सूरत वाले तुम पर लाखों सलाम
तुम पर लाखों सलाम

(सामाने बख़्शिश, स. 80 ता 83)

अल्लाह की इ़नायत....मरह़बा मे'राज की अ़ज़्मत....मरह़बा
बुराक़ की क़िस्मत....मरह़बा बुराक़ की सुरअ़त....मरह़बा
अक़्सा की शौकत....मरह़बा नबियों की इमामत....मरह़बा
आक़ा की रिफ़्अ़त....मरह़बा आसमां की सियाह़त....मरह़बा
मकीने ला मकां की अ़ज़्मत....मरह़बा
चश्माने नुबुव्वत...मरह़बा...मरह़बा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और ह़िक्मत

✹ मे'राजे मुस्त़फ़ा की ह़िक्मतें जो उ़लमा ने बयान फ़रमाईं, उन में से एक ह़िक्मत येह भी थी, कि मह़बूबे करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मत तमाम काइनात पर ज़ाहिर हो, इसी लिये जब मस्जिदे अक़्सा पहुंचे तो तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इमामत फ़रमाई ताकि तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत का इज़्हार हो । (मआ़रिजुन्नुबुव्वत, रुक्ने सिवुम, स. 85) चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : फिर में बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुवा, पस मेरे लिये सारे अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जम्अ़ किया गया, तो सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे आगे किया, यहां तक कि मैं ने सब की इमामत करवाई ।

(سنن نسائی، ص۸۱، حدیث:۴۴۸)

नमाज़े अक़्सा में था येही सिर्र इ़यां हों मा'निये अव्वल आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे ह़ाज़िर जो सल्त़नत आगे कर गए थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 232)

www.dawateislami.net

शे'र की वज़ाह़त

(★) शबे मे'राज मस्जिदे अक़्सा में जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम अम्बियाए किराम व रुसुले उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नमाज़ पढ़ाई, इस में येही राज़ था कि पहले और आख़िरी का फ़र्क़ वाज़ेह़ हो जाए (कि आख़िर में आने का मत़लब येह नहीं कि आख़िरी की शानो अज़मत भी कम है) जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले अपनी नुबुव्वतों के डंके बजा गए थे, वोह सारे के सारे हाथ बांध कर ख़ातिमुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे हाथ बांधे खड़े थे।

ऐ आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा ! मे'राज वाली रात या'नी आज की रौशन व मुनव्वर रात, सरवरे काइनात, मह़बूबे रब्बे अ़ज़्ज़ो समावात ने नबियों की इमामत के साथ साथ आसमानों पर फ़िरिश्तों की इमामत भी फ़रमाई ताकि फ़िरिश्तों पर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत ज़ाहिर हो।

(मआ़रिजुन्नुबुव्वत, रुक्ने सिवुम, स. 85)

ग़रज़ कि जिधर जिधर से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत को उन पर ज़ाहिर फ़रमाया गया।

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है चर्ख़ में आसमान है
जाने मुराद अब किधर हाए तेरा मकान है
अ़र्श पे ताज़ा छेड़ छाड़, फ़र्श में तुरफ़ा धूमधाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है
अ़र्श पे जा के मुर्ग़े अ़क़्ल थक के गिरा ग़श आ गया
और अभी मन्ज़िलों परे पहला ही आस्तान है
शाने ख़ुदा न साथ दे उन के ख़िराम का वोह बाज़
सिदरा से ता ज़मीं जिसे नर्म सी इक उड़ान है
*ख़ौफ़ न रख **रज़ा** ज़रा तू तो है अ़ब्दे मुस्त़फ़ा*
तेरे लिये अमान है, तेरे लिये अमान है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 178)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मे'राजे मुस्तफ़ा की एक और हिक्मत

✸ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला कुरआने करीम में पारह 11, सूरतुत्तौबा, आयत नम्बर 111 में इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* ***अल्लाह*** *ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है ।*

इस आयते करीमा में है कि **अल्लाह** तआ़ला मोमिनों के जानो माल का ख़रीदार है और मोमिन बेचने वाले हैं, मबीअ़ (या'नी बेची जाने वाली चीज़) मोमिनीन के जानो माल हैं और समन (या'नी इवज़ व क़ीमत) जन्नत है । येह सौदा महबूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत से हुवा है । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस सौदे के वकील हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मोमिनीन की मबीअ़ (मोमिनीन की जानों) को तो मुलाहज़ा फ़रमाया था, मे'राज की रात इवज़ (जन्नत) को देखने के लिये तशरीफ़ ले कर गए ।

पर्दा रुख़े अन्वर से जो उठा शबे मे'राज
जन्नत का हुवा रंग दो बाला शबे मे'राज
ऐ रह़मते आ़लम तेरी रह़मत के तसद्दुक़
हर एक ने पाया तेरा सदक़ा शबे मे'राज
जिस वक़्त चली शाहे मदीना की सुवारी
सज्दे में झुका अ़र्शे मुअ़ल्ला शबे मे'राज
येह शाने जलालत कि निहायत ही अदब से
जिब्रईल ने आक़ा को जगाया शबे मे'राज
दुल्हा थे मुह़म्मद तो बराती थे फ़िरिश्ते
इस शान से पहुंचे मेरे मौला शबे मे'राज
मुमकिन ही नहीं अ़क़्ले दो आ़लम की रसाई
ऐसा दिया ***अल्लाह*** *ने रुत्बा शबे मे'राज*
उस में से ***जमीले रज़वी*** *को भी अ़ता हो*
रह़मत का बटा ख़ास जो ह़िस्सा शबे मे'राज

(क़बालए बख़्शिश, स. 66, 67, 68)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और हिक्मत

✸ दुर्रतुन्नासिह़ीन में मे'राज की एक और हिक्मत येह भी बयान की गई है कि ज़मीनो आसमान का मुकालमा हुवा तो ज़मीन ने आसमान पर फ़ख़्र करते हुवे कहा : मैं तुझ से अफ़्ज़ल हूं, इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने शहरों, दरयाओं, नह्रों, दरख़्तों, पहाड़ों और दीगर कई चीज़ों से मुझे ज़ीनत अ़त़ा की है।

आसमान ने जवाब दिया : मैं तुझ से बेहतर हूं, इस लिये कि सूरज, चांद, सितारे, आसमान, बुरूज, अ़र्श व कुर्सी और जन्नत मुझ में है। ज़मीन ने कहा : "मुझ में का'बा है, जिस की ज़ियारत और त़वाफ़ अम्बिया व मुर्सलीन, औलिया और आ़म मोमिनीन करते हैं।" आसमान ने जवाब दिया : मुझ पर बैतुल मा'मूर है, इस का त़वाफ़ मलाइका या'नी फ़िरिश्ते करते हैं और मुझ में जन्नत है जो तमाम अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام तमाम औलिया व सालिह़ीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن की मुक़द्दस रूहों का ठिकाना है।

ज़मीन ने आसमान को कहा : सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातिमुन्नबिय्यीन, ह़बीबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ में इक़ामत फ़रमाई और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शरीअ़त मुझ पर जारी फ़रमाई है।

जब आसमान ने येह सुना, तो जवाब देने से आ़जिज़ आ गया और चुप हो गया। फिर आसमान ने **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मुज़्त़र व परेशान की मदद फ़रमाता है, जब वोह तुझे पुकारे, फिर आसमान अ़र्ज़ करने लगा : तू मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेरी त़रफ़ बुला ताकि मैं उन से शर्फ़ ह़ासिल करूं, जिस त़रह़ तू ने ज़मीन को उन के जमाल से शर्फ़ बख़्शा है।" **अल्लाह** तआ़ला ने उस की दुआ़ क़बूल की और मे'राज की रात आसमान को येह शर्फ़ अ़त़ा फ़रमाया।

(درة الناصحين، ص ۱۲۳)

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मुफ़्ती ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

हैं अ़र्शे बरीं पर जल्वा फ़िगन महबूबे ख़ुदा سُبحان الله
इक बार हुवा दीदार जिसे, सौ बार कहा سُبحان الله
है अ़ब्द कहां मा'बूद कहां, मे'राज की शब है राज़ निहां
दो नूर हिजाबे नूर में थे ख़ुद रब ने कहा سُبحان الله
हैरान हुवे बर्क़ और नज़र इक आन है और बरसों का सफ़र
राकिब ने कहा **अल्लाह** *ग़नी मर्कब ने कहा* سُبحان الله
त़ालिब का पता मत़लूब को है, मत़लूब है त़ालिब से वाक़िफ़
पर्दे में बुला कर मिल भी लिये पर्दा भी रहा سُبحان الله
जब सज्दों की आख़िरी ह़दों तक जा पहुंचा अ़बूदिय्यत वाला
ख़ालिक़ ने कहा مَا شَآءَ الله *ह़ज़रत ने कहा* سُبحان الله
समझे **ह़ामिद** *इन्सान ही क्या, येह राज़ हैं हुस्नो उल्फ़त के*
ख़ालिक़ का ह़बीबी कहना था ख़ल्क़त ने कहा سُبحان الله

(बयाज़े पाक, स. 33)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और ह़िक्मत

✸ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि अपना अ़सा ज़मीन पर डाल दो, जब अ़सा डाला तो वोह अज़्दहा बन गया, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया कि पकड़ लो, जब पकड़ लिया तो वोह दोबारा अ़सा बन गया, येह तमाम मुशाहदा इस लिये था कि कलीम का मुक़ाबला जब फ़िरऔ़न के जादूगरों से हो तो उस माह़ोल की हैबत उन पर त़ारी न हो, पूरे अ़ज़्म के साथ मुक़ाबला कर सकें।

कल बरोज़े क़ियामत नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शफ़ाअ़त फ़रमानी है, बल्कि शफ़ाअ़त का दरवाज़ा आप से खुलना है, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को काइनात के अ़जाइबात, जन्नत के दरजात और जहन्नम का मुशाहदा करा दिया, इस के इ़लावा और भी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाईं ताकि क़ियामत के हौलनाक दिन की हैबत आप पर त़ारी न हो सके, पूरे अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल के साथ शफ़ाअ़त कर सकें। (मआ़रिजुन्नुबुव्वत, रुक्ने सिवुम, स. 80, मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत के भाई जान मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोज़े मह़शर की क्या ख़ूब मन्ज़र कशी फ़रमाते हैं :

तुम्हारा नाम मुसीबत में जब लिया होगा — हमारा बिगड़ा हुवा काम बन गया होगा
गुनाहगार पे जब लुत्फ़ आप का होगा — किया बिग़ैर क्या बे क्या क्या होगा
दिखाई जाएगी मह़शर में शाने मह़बूबी — कि आप ही की ख़ुशी, आप का कहा होगा
ख़ुदाए पाक की चाहेंगे अगले पीछले ख़ुशी — ख़ुदाए पाक ख़ुशी उन की चाहता होगा
किसी के पाउं की बेड़ी ये काटते होंगे — कोई असीरे ग़म उन को पुकारता होगा
किसी त़रफ़ से सदा आएगी हुज़ूर आओ — नहीं तो दम में ग़रीबों का फ़ैसला होगा
कोई कहेगा दुहाई है या रसूलल्लाह — तो कोई थाम के दामन मचल गया होगा
किसी को ले के चलेंगे फ़िरिश्ते सूए जह़ीम — वोह उन का रास्ता फिर फिर के देखता होगा
ज़बान सूखी दिखा कर कोई लबे कौसर — जनाबे पाक के क़दमों पे गिर गया होगा
कोई क़रीबे तराज़ू, कोई लबे कौसर — कोई सिरात़ पर उन को पुकारता होगा
येह बे क़रार करेगी सदा ग़रीबों की — मुक़द्दस आंखों से तार अश्क का बंधा होगा
हज़ार जान फ़िदा नर्म नर्म पाउं से — पुकार सुन के असीरों की दौड़ता होगा
अ़ज़ीज़ बच्चे को मां जिस त़रह़ तलाश करे — ख़ुदा गवाह येही ह़ाल आप का होगा
कहेंगे और नबी اِذْهَبُوْا اِلٰی غَیْرِی — मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا होगा
दुआ़ए उम्मते बदकार विर्दे लब होगी — ख़ुदा के सामने सज्दे में सर झुका होगा
ग़ुलाम उन की इ़नायत से चैन में होंगे — अ़दू हुज़ूर का आफ़त में मुब्तला होगा
*मैं उन के दर का भिकारी हूं फ़ज़्ले मौला से — **ह़सन** फ़क़ीर का जन्नत में बिस्तरा होगा*

(ज़ौक़े ना'त, स. 35 ता 37)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मे'राजे मुस्तफ़ा की एक और ह़िक्मत

✸ मे'राज की एक ह़िक्मत येह भी है कि सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम अक़्सामे वह़ी से शर्फ़ पाएं, वह़ी की एक क़िस्म येह है कि **अल्लाह** तआ़ला बिला वासित़ा कलाम फ़रमाए और येह वह़ी की सब से आ'ला क़िस्म है । चुनान्चे, मे'राज की रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बिला वासित़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम फ़रमाया । जैसा कि पारह 27 सूरतुन्नज्म की आयत नम्बर 10 में इरशाद होता है :

فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ﴿۱۰﴾ *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* *अब वह़ी फ़रमाई अपने बन्दे को जो वह़ी फ़रमाई ।*

कुतुबे तफ़्सीर में लिखा है कि "اٰمَنَ الرَّسُوْلُ" वाली आयात जो कि सूरतुल बक़रह की आख़िरी दो आयात हैं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात **अल्लाह** तआ़ला से बिला वासित़ा सुनी, इसी त़रह़ कुछ सूरतुद्दुह़ा और कुछ सूरए अलम नश्रह़ मे'राज की रात सुनी ।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, सूरतुश्शूरा, जि. 8, स. 345)

ऐ आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा ! सूरतुल बक़रह की आख़िरी 2 आयात जो सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ालिक़े अर्ज़ो समावात عَزَّوَجَلَّ से शबे मे'राज कुर्बे ख़ास में सुनीं । आइये ! उन की फ़ज़ीलत सुनिये और वक़्तन फ़-वक़्तन उन की तिलावत भी करते रहिये ।

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीनो आसमान को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी, फिर उस में से सूरतुल बक़रह की आख़िरी दो आयतें नाज़िल फ़रमाईं । जिस घर में तीन रातें इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैत़ान उस घर के क़रीब न आएगा । (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۴ص۴۰۴حدیث۲۸۹۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सूरतुल बक़रह की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ेगा वोह उसे किफ़ायत करेंगी । (صَحِیحُ البُخَارِیّ ج۳ص۴۰۵حدیث۵۰۰۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूरतुल बक़रह की दो आयतें किफ़ायत करने से मुराद येह है कि येह दो आयतें उस के उस रात के क़ियाम (या'नी रात की इबादत) के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखेंगी । एक क़ौल येह भी है कि उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़ात से बचाएंगी । وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم (فَتْحُ البَارِی، ۱۰/۴۸)

www.dawateislami.net

हकीमुल उम्मत, मुफ्ती अहमद यार खान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : (सूरतुल बक़रह की आख़िरी दो आयतें) दुख दर्द, रन्जो ग़म में काफ़ी हैं कि इन की तिलावत करने वाला (या'नी सूरए बक़रह की आख़िरी दो आयात की रात को तिलावत करने वाला) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुख दर्द से महफ़ूज़ रहता है और अगर इत्तिफ़ाक़न कभी आ भी जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुश्किल हल कर देता है या तमाम दुरूद व वज़ीफ़ों की तरफ़ से काफ़ी हैं, या नमाज़े तहज्जुद में जो इन आयतों की तिलावत किया करे, तो बहुत सी तिलावत से काफ़ी हैं।

(मिरआत, जि. 3, स. 232)

बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया
लम्अए बातिन में गुमने जल्वए ज़ाहिर गया
अल्लाह अल्लाह येह उलुव्वे ख़ासे अब्दिय्यत ***रज़ा***
बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 52, 54)

अल्लाह की इनायत....मरहबा मे'राज की अज़मत....मरहबा
बुराक़ की क़िस्मत....मरहबा बुराक़ की सुरअत....मरहबा
अक़्सा की शौकत....मरहबा नबियों की इमामत....मरहबा
आक़ा की रिफ़्अत....मरहबा आसमां की सियाहत....मरहबा
मकीने ला मकां की अज़मत....मरहबा
चश्माने नुबुव्वत...मरहबा...मरहबा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मे'राजे मुस्तफ़ा की एक और हिक्मत

✸ **अल्लाह** तआला ने सब से पहले अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर को अपने नूर से पैदा फ़रमाया और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर को अपने कुर्बे ख़ास में रखा, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिबासे बशरिय्यत के साथ दुन्या में तशरीफ़ लाए तो उस मक़ाम का इश्तियाक़ हुवा, लिहाज़ा دَنٰی فَتَدَلّٰی के मक़ाम से सुकून व क़रार पाया।

क्या बना नामे खुदा असरा का दुल्हा नूर का
सर पे सेहरा नूर का बर में शहाना नूर का

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 244)

www.dawateislami.net

मे'राजे मुस्त़फ़ा की एक और ह़िक्मत

✹ एक ह़िक्मत येह भी बयान की गई है कि अज़ान सिखाने के लिये मे'राज करवाई गई, अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से ह़दीस है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब अज़ान सिखाने का इरादा फ़रमाया तो जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام एक सुवारी ले कर आए, जिस को बुराक़ कहा जाता था, आप उस पर सुवार हुवे ।'' (فتح الباری، ج۳، ص۶۸)

वोही ला मकां के मकीं हुवे, सरे अ़र्श तख़्त नशीं हुवे
वोह नबी है जिस के हैं येह मकां, वोह ख़ुदा है जिस का मकां नहीं
सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 108, 109)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि अपने ईमान की सलामती व पुख़्तगी के लिये, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हर हर मो'जिज़े पर सच्चे दिल से ईमान रखें और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने के बजाए उन की सच्ची अ़क़ीदतो मह़ब्बत अपने दिल में पैदा करें, इस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हमेशा वाबस्ता रहिये, मदनी चेनल के प्यारे प्यारे सिलसिले देखिये और हर जुमा'रात को अपने शहर में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की आ़दत बनाइये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से हमारे अ़क़ाइद की ह़िफ़ाज़त होती रहेगी । हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत तो हमारा मदनी इन्आ़म और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम भी है ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस इजतिमाए पाक में जहां तिलावते कुरआने करीम, ज़िक्रो दुरूद और दुआ में शिर्कत की सआ़दत नसीब होती है, वहीं इ़ल्मे दीन के लिये सफ़र करने, इ़ल्मे दीन सीखने और इस को दूसरों तक पहुंचाने के फ़ज़ाइल भी ह़ासिल होते हैं। आइये ! इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं। फ़रमाया :

1. مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَلْتَمِسُ فِيْهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِهٖ طَرِيْقًا اِلَى الْجَنَّةِ जो ऐसे रास्ते पर चले जिस में इ़ल्म को तलाश करे, इस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है।

(مسلم، کتاب الذکر و الدعاء... الخ، باب فضل الاجتماع... الخ، ص ۱۴۴۸، حدیث: ۲۶۹۹)

2. फ़रमाया : مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَكَفَّلَ اللّٰهُ بِرِزْقِهٖ जो शख़्स इ़ल्म की त़लब में रहता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के रिज़्क़ का ज़ामिन है।

(تاریخ بغداد، محمد بن القاسم بن هشام، ۳/۳۹۸)

3. इरशाद फ़रमाया : जो कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ के मुतअ़ल्लिक़ एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب ج ۱ ص ۵۴ حدیث ۲۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से जहां इ़ल्मे दीन की दौलत नसीब होती है, वहीं गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से मह़ब्बत का जज़्बा भी बेदार होता है। आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं।

(मुज़फ़्फ़राबाद, कश्मीर) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने बचपन में ही कुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली। लेकिन ह़ाफ़िज़े कुरआन होने के बा वुजूद मेरा उठना बैठना बुरे दोस्तों के साथ था। ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात एक ऐसे इस्लामी भाई से हुई जो दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे, जब उन्हों ने मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत दी, तो उन के लहजे की मिठास मेरे दिल पर असर कर गई और मैं इजतिमाअ़

www.dawateislami.net

में शरीक हो गया । जब मैं ने इस मदनी माह़ोल को क़रीब से देखा तो बे ह़द मुतअस्सिर हुवा और मैं ने चारसू इल्मे दीन के मोती बिखेरने वाले दा'वते इस्लामी के शो'बे "**जामिअ़तुल मदीना**" में दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) करने के लिये दाख़िला ले लिया और इसी दौरान اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में 12 माह का सफ़र भी मुकम्मल कर चुका हूं ।

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर — जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी — दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल
तू आ बे नमाज़ी, है देता नमाज़ी — ख़ुदा के करम से बना मदनी माह़ोल
गर आए शराबी, मिटे हर ख़राबी — चढ़ाएगा ऐसा नशा मदनी माह़ोल
ऐ बीमारे इस्यां, तू आ जा यहां पर — गुनाहों की देगा दवा मदनी माह़ोल
गुनहगारो आओ, सियह कारो आओ — गुनाहों को देगा छुड़ा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 647, 648)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अम्बियाए किराम बे मिस्ल हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़िअ़ए मे'राज से जहां इस की चन्द ह़िक्मतें मा'लूम हुईं, वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام बे मिस्लो बे मिसाल हैं । उन की शानो अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि जब प्यारे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुराक़ पर सुवार हो कर बैतुल मुक़द्दस के लिये रवाना हुवे तो बुराक़ की तेज़ रफ़्तारी का येह आ़लम था कि जहां उस की निगाह जाती वहां उस का क़दम पड़ता था, इस सफ़र के दौरान जब प्यारे आक़ा, मक्की मदनी दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के मज़ारे पुर अन्वार के पास से गुज़रे, जो रेत के सुर्ख़ टीले के पास वाक़ेअ़ था, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام अपनी क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे थे ।

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل...الخ، ص۹۲۷، الحدیث: ۲۳۷۵)

www.dawateislami.net

ग़ौर कीजिये कि अगर हम किसी तेज़ रफ़्तार गाड़ी में सुवार हों तो हमें कुछ समझ नहीं आता, बसा अवक़ात तेज़ रफ़्तारी के सबब रास्ते में खड़े आश्ना चेहरे भी पहचाने नहीं जाते, ह़ालांकि हमारी गाड़ी की रफ़्तार उस बुराक़ के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं, लेकिन निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कमाल देखिये कि इन्तिहाई तेज़ रफ़्तार बुराक़ पर सुवार हैं, इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को देख लिया और येह भी बता दिया कि वोह अपने मज़ार में नमाज़ पढ़ रहे थे। यहां येह बात भी ज़ेह्न में रखिये कि बैतुल मुक़द्दस में जहां तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस्तिक़्बाल के लिये पहले ही से मौजूद थे, उन में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام भी मौजूद थे और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब बुराक़ पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर आसमानों पर पहुंचे, वहां दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से छटे आसमान पर मुलाक़ात हुई, इस से मा'लूम हुवा की अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी त़ाक़त व कुव्वत अ़त़ा फ़रमाई है कि नूरी बुराक़ भी उन की नबवी त़ाक़त का मुक़ाबला नहीं कर सकता नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जुम्ला अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام बा इख़्तियार और क़ादिर हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें येह इख़्तियार दे रखा है कि वोह जब चाहें जहां चाहें जा सकते हैं, जब दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की त़ाक़त का येह आ़लम है तो हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो तमाम अम्बिया के भी इमाम हैं और सब के सरदार भी हैं, उन की त़ाक़त व इख़्तियार का अन्दाज़ा कौन कर सकता है ? सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं :

ख़ल्क़ से औलिया, औलिया से रुसुल — और रसूलों से आ'ला हमारा नबी
मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार — ताजदारों का आक़ा हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 138, 139)

अश्आ़र की वज़ाह़त

(★) तमाम इन्सानों में औलियाए किराम अफ़्ज़लो आ'ला, औलियाए किराम से अम्बिया व मुर्सलीन अफ़्ज़ल और सब रसूलों से आ'ला हमारा नबी।

www.dawateislami.net

(★) अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दोनों जहानों के बादशाह होते हैं और हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मक़ामो मर्तबा येह है कि आप उन बादशाहों के भी बादशाह हैं।

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चन्द मुशाहदात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे मे'राज प्यारे मुस्तफ़ा, का'बे के बदरुद्दुजा, त़यबा के शमसुद्दुह़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काइनात की सैर फ़रमाते हुवे कई अ़जाइबाते कुदरत का मुशाहदा फ़रमाया। जन्नत में तशरीफ़ ले जा कर जहां अपने गुलामों के जन्नती मह़ल और मक़ामात मुलाह़ज़ा फ़रमाए, वहीं ना फ़रमानों को अ़ज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार भी देखा, जो अपने गुनाहों की सज़ा में इन्तिहाई दर्द नाक अ़ज़ाब में मुब्तला थे। आइये ! इब्रत ह़ासिल करने के लिये जहन्नम के चन्द मुशाहदात सुनते हैं।

मन्क़ूल है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जहन्नम में कुछ ऐसे लोग नज़र आए जो मुरदार खा रहे थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्रईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह वोह हैं, जो लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे।

(مسند احمد، مسند عبد الله بن العباس...الخ، ۱/۵۵۳، الحديث: ۲۳۲۴.)

इसी त़रह़ (येह भी देखा) एक आदमी नहर में तैरते हुवे पथ्थर निगल रहा था, बताया गया कि येह सूद ख़ोर है।

(شعب الايمان، الثامن والثلاثون من شعب الايمان، ٤/٣٩١، الحديث: ٥٥٠٩.)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास से गुज़रे, जिन के सर पथ्थरों से कुचले जा रहे थे, हर बार कुचले जाने के बा'द वोह पहले की त़रह़ दुरुस्त हो जाते थे और (दोबारा कुचल दिये जाते), इस मुआ़मले में उन से कोई सुस्ती न बरती जाती थी। इस्तिफ़्सार पर जिब्रईले अमीन عَلَيۡهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : येह वोह लोग हैं जिन के सर नमाज़ से बोझल हो जाते थे।

(مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب منه في الاسراء، ١/٢٣٦، الحديث: ٢٣٥.)

कुछ लोग ऐसे भी थे जो आग की शाखों से लटके हुवे थे। येह वोह लोग थे जो दुन्या में अपने वालिदैन को गालियां देते थे।

(الزواجر، كتاب النفقات على الزوجات...الخ، الكبيرة الثانية بعد الثلاثمائة، ٢/١٣٩)

www.dawateislami.net

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बा'ज़ ऐसे लोगों को भी देखा जिन के होंट ऊंट के होंटों की त़रह़ (बड़े बड़े) थे, उन पर ऐसे अफ़राद मुक़र्रर थे जो उन के होंट पकड़ कर आग के बड़े बड़े पथ्थर उन के मुंह में डालते और वोह उन के नीचे से निकल जाते। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरयाफ़्त करने पर जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : येह वोह लोग हैं जो यतीमों का माल ज़ुल्मन खा जाते। (الشریعۃ للآجری، باب...انہ اسری بہ...الخ، ۳/۱۵۳۲، الحدیث:۱۰۲۷.)

इसी त़रह़ वोह लोग जो दुन्या में अपने मालों की ज़कात नहीं देते थे, मीठे आक़ा, मे'राज के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस ह़ाल में देखा कि उन के आगे और पीछे चिथड़े लटक रहे थे और वोह चौपायों की त़रह़ चरते हुवे कांटे दार घांस, थोहर (एक ख़ारदार और ज़हरीला पौदा) खा रहे थे और जहन्नम के तपे हुवे (या'नी गर्म) पथ्थर निगल रहे थे। (الترغیب والترھیب، ۱/۳۰۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा इन अ़ज़ाबात पर ग़ौर कीजिये और फिर अपनी ना तुवानी व कमज़ोरी पर नज़र कीजिये। आह ! हमारी कमज़ोरी का ह़ाल तो येह है कि हल्का सा बुख़ार या सर में दर्द हो जाए तो हम तड़प उठते हैं, तो फिर आख़िरत के येह दर्द नाक अ़ज़ाबात कैसे बरदाश्त कर सकेंगे ? हमारे नाज़ुक बदन हरगिज़ इन अ़ज़ाबात का सामना नहीं कर सकते, लिहाज़ा अभी वक़्त है होश में आइये और लोगों की ग़ीबतें करने, चुग़लियां खाने, उन के ऐ़बों को उछालने से बाज़ रहिये कि ग़ीबत करने वालों, चुग़ल ख़ोरों और पाक बाज़ लोगों के ऐ़ब तलाश करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) कुत्तों की शक्ल में उठाएगा। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب ج۳ص۳۲۵حدیث۱۰)

इसी त़रह़ सूदी कारोबार के ज़रीए ह़राम रोज़ी कमाने, खाने से भी बचते रहिये क्यूंकि सूद का एक दिरहम लेना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस बन्दे के ह़ालते इस्लाम में 33 मरतबा बदकारी करने से ज़ियादा बड़ा गुनाह है।

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب ماجاء فی الربا، الحدیث: ۶۵۷۴، ج۴، ص۲۱۱)

लिहाज़ा ह़लाल रोज़ी कमाइये, पंज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त की आ़दत बनाइये, दोनों जहां में कामयाबी नसीब होगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ऐ आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा ! हाथों हाथ सच्चा अ़ह्द कीजिये कि आइन्दा हम कभी किसी की ग़ीबत नहीं करेंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अब कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मां-बाप का दिल नहीं दुखाएंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ किसी का भी माल ना ह़क़ नहीं खाएंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो साह़िबे निसाब हैं निय्यत करें कि पूरी पूरी ज़कात अदा करेंगे । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

ए'तिकाफ़ की तरग़ीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से बचने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होना, हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और दा'वते इस्लामी के तह़्त पूरे माहे रमज़ान या आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ में शिर्कत करना भी है । आ़शिक़ाने रमज़ान के लिये ख़ुश ख़बरी कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद आमद है और इस माहे मुबारक की बरकतों के तो क्या कहने ! इस माह में इ़बादत व तिलावत और ज़िक्रो दुरूद की कसरत कर के अपने नामए आ'माल में कसीर नेकियां लिखवाने के मवाक़ेअ़ बहुत बढ़ जाते हैं । हमें भी चाहिये कि गुनाहों से ख़ुद को बचाने और शबो रोज़ नेकियों में बसर करने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़्त पूरे माहे रमज़ान के ए'तिकाफ़ में शिर्कत की न सिर्फ़ ख़ुद निय्यत करें, बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों पर भी इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी तय्यार करें । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَلَه مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِه जिस शख़्स ने ईमान के साथ सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ किया, उस के पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । (جامع صغیر ص۵۱۶الحدیث۸۴۸۰)

या ख़ुदा माहे रमज़ां के सदक़े सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
नेक बन जाऊं जी चाहता है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 136)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो हर साल वरना ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये । हमारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुसूसन रमज़ान शरीफ़ में इबादत का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाया करते । चूंकि माहे रमज़ान ही में शबे क़द्र को भी पोशीदा रखा गया है, लिहाज़ा इस मुबारक रात को तलाश करने के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़ फ़रमाया और यूं भी मस्जिद में रहना बहुत बड़ी सआ़दत है और मो'तकिफ़ की तो क्या बात है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये अपने आप को तमाम मशाग़िल से फ़ारिग़ कर के मस्जिद में डेरे डाल देता है । फ़तावा आ़लमगीरी में है : ''ए'तिकाफ़ की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं, क्यूंकि इस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये मुकम्मल त़ौर पर अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मस्रूफ़ कर देता है और दुन्या की उन तमाम मस्रूफ़ियात से किनारा कश हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन, ह़ुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं । (क्यूंकि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और ए'तिकाफ़ का अस्ल मक़्सद जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों) से मुशाबहत रखता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें ह़ुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं और उन के साथ मुशाबहत रखता है जो शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (या'नी पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उकताते नहीं ।''

(फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1, स. 212)

मजलिसे त़रबिय्यती ए'तिकाफ़ !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दौराने ए'तिकाफ़ नेकियां करने के किस क़दर मवाक़ेअ़ मिलते हैं । हमें भी हर साल न सही कम अज़ कम ज़िन्दगी में एक बार इस अदाए मुस्त़फ़ा को अदा करते हुवे पूरे माहे

www.dawateislami.net

रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलानी चाहिये । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तहत रमज़ानुल मुबारक में ए'तिकाफ़ के निज़ाम को मुनज़्ज़म करने के लिये एक शो'बा **''मजलिसे ए'तिकाफ़''** भी है । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मजलिसे ए'तिकाफ़ के तहत न सिर्फ़ पाकिस्तान बल्कि दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक की सेंकड़ों मसाजिद में पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक और आख़िरी अ़शरे में इजतिमाई ए'तिकाफ़ का एहतिमाम किया जाता है । इन में हज़ार हा इस्लामी भाई मो'तकिफ़ हो कर पंज वक़्ता नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने के साथ साथ दीगर नफ़्ल इ़बादात की सआ़दत भी पाते हैं, इस के इ़लावा ए'तिकाफ़ में वुज़ू व ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़ा और दीगर शरई मसाइल भी सिखाए जाते हैं और रोज़ाना बा'दे ज़ोहर व बा'दे तरावीह़ 2 मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से किये गए सुवालात के दिल चस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर जवाबात से मा'लूमात का ढेरों ख़ज़ाना भी हाथ आता है । नीज़ कई मो'तकिफ़ीन रमज़ानुल मुबारक ख़त्म होने पर चांद रात ही से आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाते हैं ।

रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से गुनाहों की कालक धुले — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों का तुम्हें ख़ूब जज़्बा मिले — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
भाई गर चाहते हो ''नमाज़ें पढ़ूं'' — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है ''आगे बढ़ूं'' — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम को राह़त की ने'मत अगर चाहिये — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 640)

मदनी अ़तिय्यात की तरग़ीब

दा'वते इस्लामी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक है, जिस का मदनी पैग़ाम अब तक कमो बेश **200 मुमालिक** में पहुंच चुका है, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी ख़िदमते दीन के तक़रीबन **102**

शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, सिर्फ़ **जामिअ़तुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात), **मद्रसतुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात), **मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन** (लिल बनीन व लिल बनात) और **मदनी चेनल** के सालाना अख़राजात करोड़ों नहीं अरबों रुपये में हैं, दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये ज़कात, सदक़ात, मदनी अ़त़िय्यात देने के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों, दोस्तों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल बता कर मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ कीजिये । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़े बन्द करता है । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सदक़ा बुरी मौत को रोकता है ।

लंगरे रज़विय्या में हि़स्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में मुल्क व बैरूने मुल्क हर साल हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल पूरे माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करते हैं, इन आ़शिक़ाने रसूल के लिये **''लंगरे रज़विय्या''** (सह़री व इफ़्त़ारी) का बहुत बड़ा इन्तिज़ाम किया जाता है ताकि येह आ़शिक़ाने रसूल दिल जम्ई के साथ इल्मे दीन के मदनी ह़ल्क़ों और मदनी मुज़ाकरों में भरपूर तवज्जोह के साथ शिर्कत कर सकें । लंगरे रज़विय्या की मद में करोड़ों रुपये के अख़राजात होते हैं जो कि मो'तकिफ़ीन से नहीं लिये जाते बल्कि मुख़य्यर इस्लामी भाई इस नेकी के अ़ज़ीम काम में अपना ह़िस्सा शामिल करते हैं । इस साल भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुल्क व बैरूने मुल्क सेंकड़ों मक़ामात पर पूरे माह और आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ होगा, जिस में हज़ारों आ़शिक़ाने रमज़ान, माहे रमज़ान की मुबारक साअ़तों से बरकतें लूटने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे । तमाम आ़शिक़ाने रसूल रिज़ाए इलाही और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **''लंगरे रज़विय्या''** की मद में अपना ह़िस्सा शामिल करने की निय्यत फ़रमा लीजिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज सत्ताईस्वीं शब है और कल सत्ताईस्वीं का दिन होगा, इस दिन या'नी 27 रजब के रोज़े की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है। "जो कोई ख़ुश नसीब 27 रजब का रोज़ा रखता है, उसे 60 माह के रोज़ों का सवाब मिलता है।" (कफ़न की वापसी, स. 8)

सौ साल के रोज़ों का सवाब

27 वीं रजब शरीफ़ के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "रजब में एक दिन और रात है, जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (या'नी इबादत) करे तो गोया उस ने सौ साल के रोज़े रखे, सौ बरस की शब बेदारी की और येह रजब की सत्ताईस तारीख़ है।" (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ص۳۷۴حدیث۳۸۱۱)

अ़न क़रीब माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की आमद होने वाली है, इस माहे मुबारक के रोज़ों के भी बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल हैं। चुनान्चे,

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : (रमज़ान के बा'द) सब से अफ़्ज़ल शा'बान के रोज़े हैं, ता'ज़ीमे रमज़ान के लिये।

(شُعَبُ الایمان، ج3، ص377، حدیث3819)

उ़म्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है : "हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ महशर, मदीने के ताजवर, बिइज़्ने रब्बे अक्बर, ग़ैबों से बा ख़बर, महबूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरे शा'बान के रोज़े रखा करते थे।" फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या सब महीनों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़दीक ज़ियादा पसन्दीदा शा'बान के रोज़े रखना है ?" तो शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान को लिख देता है और मुझे येह पसन्द है कि मेरा वक़्ते रुख़्सत आए और मैं रोज़ा दार हूं।" (مُسندِ ابو یعلٰی، ج۴، ص277، حدیث4890)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मे'राज के दुल्हा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ कल का नफ़्ल रोज़ा रखने, शा'बान और फिर माहे रमज़ान के सारे रोजे़ रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । काश ! हम पूरे माहे रमज़ान का या आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ करने में कामयाब हो जाएं । काश ! अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ख़ूब ख़ूब मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने की तौफ़ीक़ मिल जाए । اٰمين بجاه النبى الامين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج١ ص٥٥ حديث ١٧٥ دار الكتب العلمية بيروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

सलाम करने की सुन्नतें और आदाब !

❖ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है । ❖ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो, वहां मौजूद मुसलमानों को सलाम करना कारे सवाब है । ❖ सलाम में पहल करना सुन्नत है । ❖ सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है । ❖ सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी है । जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है । (شُعَبُ الايمان ج٦ ص ٤٣٣) ❖ सलाम (में पहल) करने वाले पर 90

www.dawateislami.net

रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं। (कीमियाए सआ़दत) ❖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहने से 10 नेकियां मिलती हैं, साथ में وَرَحْمَةُ اللّٰه भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी और وَبَرَكَاتُهٗ शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। ❖ इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं। ❖ सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले। ❖ सलाम और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये। पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये। وَعَلَيْكُمُ السَّلَام

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

(101 मदनी फूल, स. 2 ता 5)

आ़शिक़ाने रसूल आएं, सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net